Received: Jul '25
Revised:
Accepted: Aug '25

© 2025 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

"कामकाजी महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध निर्देषक :
डॉ. पूर्णिमा शर्मा
(सहायक आचार्य)
टांटिया विश्वविद्यालय

शोधकर्ता :
अंजु शर्मा
टांटिया विश्वविद्यालय

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध में "कामकाजी महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन" किया गया हैं। अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के बीकानेर, श्री गंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले के राजकीय एवं निजी शिक्षा संस्थानों, वित्त संस्थानों (बैंक) व चिकित्सा संस्थानों में कार्यरत् 600 महिलाओं को यादृच्छिक विधि के अन्तर्गत लाटरी विधि से चयनित किया गया। कामकाजी महिलाओं की की उपलब्धि अभिप्रेरणा मापन हेतु उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण (डॉ. वी.पी. भार्गव) एवं व्यक्तित्व कारकों के मापन हेतु व्यक्तित्व विभेदक अनुसूची (अरूण कुमार सिंह एवं आशीष कुमार सिंह) द्वारा निर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में विभिन्न संस्थानों में ककार्यरत कामकाजी महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा व्यक्तित्व कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

Keywords:- कामकाजी महिलाएं, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व कारक ।

प्रस्तावना :–

देश में परिवर्तन की जो प्रक्रिया चल रही है उसका एक महत्वपूर्ण परिणाम यह निकला कि भारतीय महिला अपनी परम्परागत स्वाभाविक विशेषता से मुक्त होने लगी है आज स्वतंत्र भारत में महिलाएँ अधिकाधिक संख्या में राजकीय एवं गैर राजकीय व्यवसायों को अपनाने लगी है इन महिलाओं की बढ़ती संख्या को भारत के किसी भी नगर के कार्य स्थलों में देखा जा सकता है वैसे तो पहले से ही निम्न वर्ग की महिलाऐं मेहनत मजदूरी करती रही हैं परन्तु उच्च और मध्यम वर्ग की महिलाऐं घर की चार दीवारी तक सीमित रहीं। स्वतंत्रता के पश्चात् औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, संस्कृतिगण तथा अनेक संवैधानिक प्रावधानों के कारण आज महिलाऐं घर से निकलकर अनेक सेवाओं में संलग्न होने लगी हैं जिससे एक नवीन कार्यकारी महिला वर्ग का उदय हुआ है और जीवन की विभिन्न समस्याओं के प्रति भारतीय नारी के बदलते दृष्टिकोण ने समाज को प्रभावित्त किया है। इस विषय में श्रीमती नीरा देसाई का मानना है कि – ''अब नारी को न तो मात्र बच्चे जनने की एक मशीन है और न ही घर की एक दासी ही माना जाता है बल्कि उसने एक नया दर्जा और एक नई सामाजिक महत्ता प्राप्त कर ली है।''

भारतीय समाज आज भी पुरूष प्रधान है किन्तु पुरूष प्रधानता धीरे–धीरे कम होती जा रही है। आज का युग आर्थिक युग है आर्थिक युग की सहज आधार उपभोक्ता संस्कृति है बढ़ती के दवाब को कम करने के लिए महिलाऐं नौकरी करना पसन्द करती है। 70 के दशक में छोटी–मोटी नौकरी से अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की शुरूआत करने वाली नारी 90 के दशक तक आते–आते अपार संभावनाओं के रूप में अवतरित हुई। 21 वीं सदी के करीब पहुँच चुके आज के दौर में कोई भी क्षेत्र महिलाओं की भागीदारी से वंचित नहीं हैं। एक गृहिणी से लेकर राजजीतिक विसात तक और श्रमिक के विस्तृत दालान से लेकर खेल के मैदान तक यह अपनी धाक जमाने में सफल हुई हैं। कला, संस्कृति, विज्ञान, साहित्य, रंगमंच, गायन, नृत्य और ऐसे कई प्रासंगिक, अप्रासंगिक क्षेत्रों में उसने विविधात्मक भूमिका अदा करते हुए अपनी महत्ता सिद्ध की है।

वर्तमान युग प्रतिस्पर्द्धात्मक युग है। अतः प्रत्येक व्यक्ति आज श्रेष्ठ एवं सम्पूर्ण बनने को आतुर है। प्रतिस्पर्द्धा की इस दौड़ में हर कोई आगे निकलने का प्रयास करता है तथा अपने इच्छित लक्ष्य को पाने की कोशिश करता है। इस युग में शिक्षा व्यवस्था को काफी सुदृढ़ किया गया है। प्राचीन काल में स्त्रियों का शिक्षित होना इतना आवश्यक नहीं समझा जाता था परन्तु वर्तमान समय में स्त्रियों की शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया जाता है जिससे स्त्रियों का शिक्षा स्तर पहले की अपेक्षा काफी बढ़ गया है। और स्त्रियाँ शिक्षित होकर देश ही नहीं विदेशों में भी सभी क्षेत्रों में अपनी सफलता का पताका फहरा रही है। जब नारी किसी भी संस्थान के अन्तर्गत कार्य करती है तो उस संस्थान की कार्यप्रणाली उसकी उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा प्रतिबल स्तर को प्रभावित्त करती है। इसी प्रकार महिलाओं के वैवाहिक स्तर की अपनी एक विशेष महत्वता होती है। विवाहित एवं अविवाहित महिलाओं दोनों ही समूहों की अपनी अलग–अलग विशेषतायें एवं प्रकृति होती है। जिसका प्रभाव उनकी क्रियाओं, कार्य शैलियों, उपलब्धि तथा प्रतिबल स्तर पर पड़ता है। बहुधा ऐसा देखा गया है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा जहाँ एक ओर संस्थागत विभिन्नता से प्रभावित्त होता है। वहीं दूसरी ओर इस पर वैवाहिक विभिन्नता का भी अत्यन्त प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तुत शोध का महत्व :–

एक समय था जब महिलाऐं केवल घरेलू महिला के रूप में घर की शोभा हुआ करती थी अर्थात घर गृहस्थी और परिवार ही उसका जीवन था तथा वह उन्हीं दायरों में बंधी रहती थी परंतु समय के साथ–साथ महिलाओं की सोच में परिवर्तन आया है इसे आर्थिक जरूरत कहें या फिर आत्मनिर्भर बनने की ललक जिसकी खातिर महिलाओं ने घर की दहलीज़ को पार कर अपनी एक जगह व पहचान बना ली है। वर्तमान समय में महिलाओं की परम्परागत भूमिका में परिवर्तन आया है। आज भारतीय महिलाऐं उच्च शिक्षा प्राप्त कर प्रशिक्षित हैं। वह अपने कार्य क्षेत्र को घर के साथ–साथ बाहरी क्षेत्रों में विस्तृत कर आर्थिक स्वतंत्रता हेतु प्रयासरत हैं। परन्तु इन समस्त कार्यशील गोरवगाथा के साथ ही एक स्थिति जो आज भी परिवर्तित नहीं हुई है, वह है भारतीय महिला की बहुआयामी भूमिका और ज़िम्मेदारियाँ जो समय के साथ परिवर्तित नहीं हुई अपितु और बढ़ गयी हैं। तभी तो महिलाओं की सफलता के प्रत्येक सोपान के साथ उनकी दोहरी भूमिका में निरंतर वृद्धि हुई है।

आजकल ज्यादातर स्त्रियाँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती है। इस वजह से उनका आत्मविश्वास तो बढ़ा ही है। जॉब के लिए जब वे घर से निकलती है तो उन्हें व्यक्तित्व के प्रति सचेत रहना पड़ता है क्योंकि आकर्षक व्यक्तित्व का सकारात्मक प्रभाव निश्चित रूप से कामकाज और कैरियर पर पड़ता है। आधुनिक युग में कार्यरत महिलाओं को जाने कितनी तरह के संघर्षों से गुजरना पड़ता है और उस पर वह कामकाजी होने की जिम्मेदारियाँ और भी बढ़ जाती है। लेकिन शुरूआत में उन्हें घर और आफिस के बीच संतुलन बिठाना बहुत कठिन लगता है। प्रोफेशनल कार्यरत महिलाओं में अपने निजी व प्रोफेशनल जीवन को एक–दूसरे पर हावी न होने दें बल्कि उनके बीच ऐसा तारतम्य बनायें कि दोनों अलग–अलग रहें। आफिस में अपने कामों की समय सीमा बनाइए ओर घर पर निजी जीवन ही बिताए दोनों के बीच धीरे–धीरे संतुलन बनाकर रखना जरूरी है। कोशिश करके आफिस का काम घर लाने से बचें, अन्यथा न केवल आप पर वर्क स्ट्रेस बढ़ेगा बल्कि अनगिनत समस्याएँ आ खड़ी होंगी यदि कार्य दबाब का तनाव आप अपने पार्टनर पर निकालेंगे तो इससे तो वातावरण खराब होने से नही बचेंगे आधुनिक युग में कार्यरत महिलाओं के मन में सिर्फ कोमल सुन्दर ओर प्रेमपूर्ण भावनाएँ ही नहीं होती बल्कि हर इंसान के मन में नकारात्मक भावनाएँ होना भी उतना ही सहज जितना सकारात्मक भावनाएँ। जहाँ महिलाओं के मन में प्रेम, सहनशीलता करूणा सहयोग जैसी सकारात्मक भावनाएँ भी छिपी होती है। वही क्रोध अवसाद, ईर्ष्या, विद्वेष, घृणा जैसी नकारात्मक भावनाएँ भी छिपी होती है। जिनकी अभिव्यक्ति समय–समय पर महिलाओं के व्यवहार के द्वारा होता रहता है।

व्यक्तित्व और सफलता के संबंध को समझनाः यह जानना आवश्यक है कि महिलाओं की व्यक्तिगत विशेषताएँ और उनका व्यक्तित्व कैसे उनकी उपलब्धियों और कार्यक्षमता को प्रभावित्त करते हैं। इससे उन्हें अपने कौशल और योग्यताओं का अधिकतम उपयोग करने में मदद मिल सकती है। कामकाजी महिलाओं के लिए समान अवसर और प्रेरणा के साधन उपलब्ध कराना आवश्यक है। कैसे महिलाओं के लिए कार्यस्थल पर एक समान और प्रेरक वातावरण बनाया जा सकता है? कामकाजी महिलाओं को मानसिक और भावनात्मक समर्थन की आवश्यकता होती है, खासकर जब वे सामाजिक और कार्यस्थल के दबाव का सामना कर रही होती हैं। इस अध्ययन से उन कारकों की पहचान होगी है जो महिलाओं को प्रेरित और समर्थित रखते हैं। महिलाओं के लिए व्यावसायिक विकास के अवसरों को समझना और उन्हें प्रदान करना महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन से यह पता चलता है कि महिलाएं किस प्रकार अपने करियर में आगे बढ़ सकती हैं और कैसे उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का इसमें योगदान होता है। इस लिए शोधकर्त्री ने कामकाजी महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन करने का निर्णय लिया।

शोध कथन :– *"कामकाजी महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन"*

शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

कामकाजी महिलाएंः

कामकाजी– कामकाजी से तात्पर्य उन महिलाओ से है जो किसी किसी प्रतिष्ठान में कार्यरत हैं और अपने घरेलू कार्य के अतिरिक्त व्यवसायिक तौर पर अनुबन्ध के अन्तर्गत रोजगार में लिप्त हैं।

उपलब्धि अभिप्रेरणा :–

उपलब्धि अभिप्रेरणा दो शब्दों से मिलकर बना है उपलब्धि + अभिप्रेरणा। उपलब्धि से आशय उस अभिप्रेरक से है जो व्यक्ति को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये निरन्तर प्रेरित करता रहता है। इस आधार पर उपलब्धि अभिप्रेरणा से तात्पर्य एक ऐसे अभिप्रेरक से होता है जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति अपने कार्य को इस तरीके से सम्पादित करता है कि उसे अपने कार्य में अधिक से अधिक सफलता मिल सके। जिन व्यक्तियों में उपलब्धि अभिप्रेरक अधिक पाया जाता है वे व्यक्ति अपने जीवन में अधिक से अधिक उच्च स्तर की सफलता प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। उपलब्धि अभिप्रेरक की मात्रा सभी व्यक्तियों में समान मात्रा में न होकर भिन्न–भिन्न मात्रा में पाई जाती है।

व्यक्तित्व कारक :–

व्यक्तित्व मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है। जो व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत अंतरो का अध्ययन करती

है। सामान्यतः व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के ऊपरी हाव–भाव उसके पहनावे से लिया जाता है। परन्तु मनोविज्ञान के व्यक्तित्व से आशय व्यक्ति के मनोभावों से लिया जाता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक सस्थानों का गव्यात्मक संघठन है। जो वातावरण के प्रति व्यक्ति के अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है। अथवा व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक संस्थानो अथवा मानसिक एवं शारीरिक संस्थानों का गव्यात्मक संघठन है। गव्यात्मक संघठन इसलिये है। क्योंकि व्यक्ति का व्यक्तित्व बाल्यावस्था से लेकर जीवन पर्यन्त परिवर्तित होता रहता है और यही व्यक्ति का जीवन भर मार्ग दर्शन करता है।

अध्ययन के उद्देष्य :–

1. राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकपनाएँ :–

1. राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की व्यक्तित्व कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्ष :–इस शोध कार्य हेतु चयनित बीकानेर, श्री गंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले के राजकीय एवं निजी शिक्षा संस्थानों, वित्त संस्थानों (बैक) व चिकित्सा संस्थानों में कार्यरत् 600 महिलाओं को यादृच्छिक विधि के अन्तर्गत लाटरी विधि से चयनित किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

1. उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण (डॉ. वी.पी. भार्गव)
2. व्यक्तित्व विभेदक अनुसूची (अरूण कुमार सिंह एवं आशीष कुमार सिंह)

प्रदत्तों का विष्लेषण व विवेचन –

(1) राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	सार्थकता का स्तर
राजकीय संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा	300	26.64	6.882	0.899	स्वीकृत
निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा	300	23.85	13.518		

व्याख्या :– परिकल्पना संख्या 1 के राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से कम है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(2) राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की व्यक्तित्व कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 2

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	सार्थकता का स्तर
राजकीय संस्थानों में कार्यरत महिलाओं के व्यक्तित्व कारक	300	117.52	13.549	1.278	स्वीकृत
निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं के व्यक्तित्व कारक	300	116.05	14.455		

परिकल्पना संख्या 2 के अनुसार राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं के व्यक्तित्व कारकों में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं के व्यक्तित्व कारकों के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान

सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से कम है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि राजकीय व निजी संस्थानों में कार्यरत महिलाओं के व्यक्तित्व कारकों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शैक्षिक सुझाव–

शैक्षिक क्षेत्र में उपयोगिता

यह अध्ययन महिला संबंधी मनोवैज्ञानिक विषयों पर शोध करने वाले विद्वानों, अनुसंधानकर्ताओं और विद्यार्थियों को एक सैद्धांतिक व व्यवहारिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। इससे वे नई शोध समस्याओं की पहचान कर सकते हैं। इस शोध से प्राप्त निष्कर्षों को महिला अध्ययन, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान एवं मानव संसाधन जैसे विषयों के पाठ्यक्रम में जोड़ा जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों को वास्तविक संदर्भों में महिलाओं की स्थिति समझने में सहायता मिलेगी।

सामाजिक क्षेत्र में उपयोगिता

सामाजिक परिवेश में महिलाओं की भूमिका और उनके अनुभवों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषित करता है, जिससे सामाजिक मान्यताओं और रूढ़ियों की समीक्षा की जा सके। इस अध्ययन से यह प्रमाणित होता है कि महिलाएं मानसिक दृढ़ता, प्रेरणा और व्यवस्थित व्यक्तित्व के बल पर किसी भी चुनौती का सामना कर सकती हैं। इससे महिलाओं के लिए सकारात्मक सामाजिक वातावरण निर्मित होता है।

मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में उपयोगिता

महिलाओं को अपने व्यक्तित्व की पहचान, भावनात्मक संतुलन और प्रेरक तत्वों को समझने में सहायता करता है, जिससे वे स्वयं को मानसिक रूप से और सशक्त बना सकें।

भावी शोध हेतु सुझााव –

1. प्रस्तुत शोध में मात्र 600 महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। इससे बड़ा न्यादर्श भी लेकर अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने राजकीय व निजी संस्थानों में शिक्षा, बैंक व चिकित्सा विभाग में कार्यरत महिलाओं को ही शामिल किया है। आगामी शोध के लिए पुरूषों को लेकर भी शोध जा सकता है।
3. राजकीय व निजी संस्थानों में शिक्षा, बैंक व चिकित्सा विभाग में कार्यरत महिलाओं राष्ट्रीय स्तर पर बड़ा न्यादर्श लेकर पुनः किया जा सकता है।
4. संस्थागत विभिन्नता एवं वैवाहिक स्तर के साथ–साथ प्रतिदर्श में चयनित इकाईयों की व्यक्तिगत रूचियाँ, आय, मानसिक तनाव एवं उनकी कार्य सन्तुष्टि भी महत्वपूर्ण कारक होते हैं इन चरों को पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. अहलूवालिया (1985), उपलब्धि प्रेरणा को प्रभावित करने वाले घटकों का अध्ययन 1985, आगरा विश्वविद्यालय उद्घृत एम.बी. ब्रुच प्ले सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन 1991 पेज नं. 333
2. कपिल, एच. के. (2006), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
3. तिवारी रीता (1984), सुविधायुक्त एवं सुविधहीन बच्चों की उपलब्धि प्रेरणा बुद्धि एवं व्यक्तित्व गुणों का अध्ययन 1984 आर.एस. यूनिवर्सिटी एम.बी. ब्रुच प्ले सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन 1991 पेज – 4
4. डॉ. शर्मा, वी. एस. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' साहित्य प्रकाशन आगरा (2004)
5. डॉ. अरोड़ा रीता, सुदेष मारवाह (2005) ''षिक्षा मनो विज्ञान एवं सांख्यिकी'' षिक्षा प्रकाषन जयपुर पृष्ठ संख्या (407–430)
6. सिंह ए.के. एण्ड गुप्ता ए. एस. (1996), एम. पर्सनेलिटी डिटरमिनेट्स ऑफ वैल्यूस एण्ड इन्टैलीजेन्स इंडियन जनरल ऑफ साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन 1996 वॉल्यूम 27;2द्ध 111–114
7. प्रवीण, दोषी (2004) ''प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण प्रभाविता को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन'' प्राइमरी शिक्षक अंक–2, अप्रैल, 2004
8. पाण्डेय, चंद्रेश (2001) अध्यापकों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों का उनकी कार्यक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन, पी–एच.डी.– शिक्षाशास्त्र, वीरबहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
9. सिंह, रामपाल और शर्मा, ओ.पी. (2008), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन।
10. सुखिया, एस.पी. (1990) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।